समझदारी से फसल चुनें, पानी बचाएँ और सूखे में भी खेती जारी रखें।

अधिक जानकारी के लिए

जिला स्तर पर :
जिला कृषि पदाधिकारी / परियोजना निदेशक, आत्मा / जिला भूमि संरक्षण पदाधिकारी / भूमि संरक्षण पदाधिकारी / जिला उद्यान पदाधिकारी / कृषि विज्ञान केन्द्र

प्रखण्ड स्तर पर :
प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी / प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक / सहायक तकनीकी प्रबंधक

ग्राम पंचायत स्तर पर :
जनसेवक / कृषक मित्र

किसान कॉल सेंटर
1800-123-1136, 1800-180-1551
(सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक)

मुख्यमंत्री किसान सहयोग कोषांग
0651-2490542 / 0651-2491642
(सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)

annapurnaprinters.rnc@gmail.com | 9835 778 101

Department of Agriculture, Animal Husbandry and Cooperative, Jharkhand
jharkhandagrianimalcoop AgriJharkhand

श्रीमती शिल्पी नेहा तिर्की
माननीया मंत्री
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
झारखण्ड सरकार

कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
झारखण्ड

श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री
झारखण्ड

सूखा की स्थिति में बागवानी एवं सब्जी खेती के लिए सुझाव

किसानों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी

राज्य स्तरीय कृषि प्रबंधन
प्रसार-सह-प्रशिक्षण संस्थान

समेति
झारखण्ड

समेति

समेति भवन, काँके रोड, राँची, झारखण्ड
Web: www.sameti.org
E-mail: sametijharkhand@rediffmail.com
sametijharkhand sameti_jharkhand

सूखे की स्थिति में फसलों की उत्पादकता प्रभावित होती है। उचित बागवानी तकनीकों को अपनाकर नुकसान को कम किया जा सकता है। निम्नलिखित तकनीकें सीमित जल उपलब्धता में सब्जी एवं फल उत्पादन बनाए रखने में सहायक हैं।

1. खरीफ मौसम में अंतरवर्ती खेती अपनाएँ।

2. आम, लीची, अमरूद जैसे फलदार पेड़ों के साथ छाया पसंद फसलें लगाएँ।

3. कम पानी में उगने वाली खरीफ सब्जियों की खेती करें।

   भिंडी, लोबिया, टमाटर, बैंगन
   मिर्च, मूली, धनिया पत्ता, गोभी, फूल गोभी

4. सूखा के समय खेत में गुड़ाई-निराई का कार्य कम करें या टालें।

5. नाइट्रोजन उर्वरक का उपयोग कम करें या देर से करें।

6. फसलों पर 2% यूरिया घोल का छिड़काव करें।

7. ड्रिप सिंचाई एवं मल्चिंग तकनीक अपनाएँ।

8. उच्च तापमान से सुरक्षा हेतु पॉलीहाउस जैसी संरक्षित इकाइयों में सब्जी फसलों की नर्सरी तैयार करें।

   संभावित नुकसान की भरपाई के लिए अंतराल (Intermittent) पर नर्सरी तैयार करते रहें।

9. सूखा सहनशील एवं कम अवधि (Short Duration) वाली किस्मों का चयन करें।

10. अधिक पानी की आवश्यकता वाले फलदार पौधों के रोपण से बचें।

11. हरी खाद एवं बॉर्डर फसल के रूप में सनहेम्प, ढैंचा एवं ग्लिरिसिडिया पौधों का उपयोग करें।

12. मोरिंगा (सहजन), आंवला तथा अन्य बहुवर्षीय पौधों का रोपण करें।

13. मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ाने के लिए जैविक पदार्थों (ऑर्गेनिक सामग्री) का उपयोग करें।

14. जल उपयोग दक्षता को अधिकतम करें, मिट्टी में नमी संरक्षण बढ़ाएं तथा मिट्टी में PGPR (Plant Growth Promoting Rhizobacteria) का उपयोग करें।

    PGPR पौधों की जड़ प्रणाली के विकास एवं पोषक तत्वों के अवशोषण में सहायता कर जल की कमी की स्थिति में पौधों को जीवित रहने में मदद करता है।

15. ग्राफ्टिंग एवं सूखा सहनशील रूट स्टॉक का उपयोग करें।

    मजबूत एवं सहनशील रूट स्टॉक फल गुणवत्ता पर जल तनाव के नकारात्मक प्रभाव को कम करता है।

16. डेफिसिट सिंचाई (Deficit Irrigation) अपनाएं।

    उपलब्ध जल संसाधनों का वैज्ञानिक एवं कुशल उपयोग कर सीमित पानी में बेहतर उत्पादन सुनिश्चित करें।